ग़ज़ल संग्रह

मंज़िल

हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ "ज़फ़र"
टीकमगढ़

Scanned with OKEN Scanner

–प्रकाशक–

नशेमन पब्लिकेशन मारफ़त
अशरफ उल्ला खाँ
मोहल्ला सैल सागर
टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)
मोबाईल– 8889496624, 9826263908

प्राप्ति स्थान –

अपेक्स कम्प्यूटर एवं फोटो कॉपी
मस्जिद भिश्तयान बस स्टेण्ड के पास
टीकमगढ़ (म0प्र0) 472001

मूल्य– 100/– रूपये
पांचवी किताब सन्–2017

@ सर्वाधिकार सुरक्षित
हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ "ज़फ़र"

MANZIL
(GAZAL SANGRAH)

मुद्रक– अशरफ उल्ला खाँ, अपेक्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स, पुराना बस स्टेण्ड, टीकमगढ़ (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

—::— फेहरिस्त —::—

1. दीवाना
2. क़ता
3. क़ता
4. ज़रूरी है
5. इश्क
6. हक़
7. खामोश
8. क़ता
9. साथी
10. चोट खाया है
11. फ़ैशन
12. नेता
13. ख्यालों में
14. दीवाने बनायें
15. जुल्म
16. आपसे
17. लक़ीर
18. क्या करें
19. बहार
20. दीवाली
21. ख्वाब
22. रखता है
23. ज़ख्मे दिल
24. देख
25. आई
26. जी चाहता है
27. बाक़ी है
28. मालूम नहीं
29. आतंकी
30. दर्द
31. कहाँ जायेगा
32. खूंख्वार
33. कभी
34. हुद–हुद
35. गरीब
36. संवरना था
37. लुटाने लगे हैं
38. आ रहे हैं वो
39. कर गया
40. रो गया
41. आने के बाद
42. याद है
43. नहीं मिला
44. साथ गायेंगे
45. ढोए हैं
46. क्या देगा
47. नहीं तो क्या
48. कहानी
49. चलते चलते
50. दीवानी
51. हाथों में
52. सताने को
53. जानी
54. प्यार आया है
55. डरता नहीं
56. नहीं चाहिये
57. बुड़ापा बुन्देली
58. बच कर रहो
59. जिन्दगी है
60. भरोसा क्या
61. बुन्देली साधू और नेता
62. काबा शरीफ
63. पत्थर और इन्सान
64. पा गया है
65. आया है
66. भूकम्प
67. हो गया
68. नहीं है
69. बुराई नहीं है
70. चलता है
71. सम्मान
72. इन्सान है
73. खुदा न करे
74. करूँ क्या
75. जिन्दगी
76. बात ही बात में
77. ईद मुबारक
78. पछताएगा
79. हिला देता है
80. मिलाने का
81. क़ता
82. फर्क़ को पड़ता है
83. आह
84. खातों में है
85. चाहता है
86. निकला
87. बच्चा
88. चाल
89. सफाई देता है
90. मैने
91. उन्होंने
92. तुकबन्दी
93. कलाम को सलाम
94. क्या
95. बच्चे
96. बना लिया
97. क़ता
98. अगर मिले
99. हो गया है
100. होते रहे
101. मजा है
102. नहीं आता
103. चूजे
104. मुझको
105. क़ता
106. नाम से
107. चाहता हूँ
108. बीमार
109. चुरा के
110. खामोश है
111 कैसे
112 घर में हैं
113 सही है
114 कश्मीर
115 नहीं होता
116 सुकून
117 हिदायत
118 शबाब
119 किश्मत
120 हो गया
121 बुढ़ापा
122 ईमान
123 चन्दा
124 बदला रहे
125 रहेगा
126 शायरी
127 चाहिए
128 कमजोरी है
129 रेल
130 नोट बंदी
131 मुश्कल है
132 नहीं है

Scanned with OKEN Scanner

नाम – हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ "ज़फ़र" टीकमगढ़

जन्म – 10.07.1937 टीकमगढ़ (म0प्र0)

पिता – मरहूम इस्लाम उल्ला खाँ "नायव तहसीलदार"

शिक्षा – मैट्रिक

विधाये – गज़ल, नज़्म, हम्द, नात, गीत

शौक – अदबी खिदमात, खेल, ड्राइंग, संगीत

सम्मान – म0प्र0 लेखक संघ का आंचलिक सम्मान 2004, मंजर अवार्ड

संप्रति – साविक सदर वज़्में अदव टीकमगढ़

प्रो0 – अपेक्स कम्प्यूटर ग्राफिक्स एवं फोटो कॉपी, रिटायर्ड, पी0टी0आई0

सम्पर्क – हाजी ज़फ़र उल्ला खाँ "ज़फ़र"
मोहल्ला सैल सागर, टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश)

मोबाईल– 8889496624, 9826263908,

प्रकाशन एवं प्रसारण – **"मंज़िल"**
ग़ज़ल संग्रह आकाशवाणी
एवं तमाम पत्र पत्रिकाओं में
प्रकाशन एवं प्रसारण

6/3/19.

Scanned with OKEN Scanner

51319

{दीवाना}

क्यूँ अपने प्यार का अफ़साना सुनाया मुझको ।
मस्त नज़रों से ही क्या जाम पिलाया मुझको ।।

समझ भी पाता मगर होश उड़ गए मेरे ।
तुम्हारे प्यार ने दीवाना बनाया मुझको ।।

नींद रातों की ही दिन का क़रार जाता रहा ।
झलक दिखा के ही क्या खूब सताया मुझको ।।

सुकूने दिल नहीं तन्हाइयों का आलम है ।
तुम्हारी याद ने रह रह के रूलाया मुझको ।।

ज़िन्दगी जीना भी दुशवार हो गई अब तो ।
सुकूँ भी जाता रहा जबसे भुलाया मुझको ।।

नहीं है मुझको गिला उर कोई शिकायत भी ।
न जाने किसलिए बेगाना बनाया मुझको ।।

समझ भी पाता **"ज़फ़र"** आपकी भी मजबूरी
जला के शम्मा क्यों परवाना बनाया मुझको ।।

{कता}

ग़ज़ब की ठण्ड है कुछ भी सुझाई देता नहीं
है कुहरा छाया हुआ कुछ दिखाई देता नहीं
निकलना घर से ही दुशवार हो गया अब तो
मिली है जिसको भी वो तो रजाई देता नहीं

बदन भी कॉप रहा दांत किट किटाने लगे
ठण्ड के मारे जो ठिटुरे हैं बिल बिलाने लगे
मिला है मौक़ा जिन्हें तापने को बैठ गये
जो अकड़े ठण्ड से वो लोग तो ठिकाने लगे

ये सर्द भी तो आ गई पूरे शबाब पर
दिखने लगी है ताज़गी खिलते गुलाब पर
पाने को इक झलक ही वो वेताव हो रहे
ऑखें चमकती देखली जिसने नक़ाब पर

—शेर—

किसी भी चश्म की कोई जुबॉ नहीं होती
नज़र नज़र से मिलाओ तो बात करती है

—शेर—

रंजों ग़म होता दिखाने की कोई चीज़ नहीं
वो क़ल्ब रूह से महसूस किया जाता है

Scanned with OKEN Scanner